JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S
ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI
डॉ यशवंतकर
संपर्क 9404646768
अनुप्रेष santoshyashwantkar@gmail.com
प्रा.डॉ. यशवंतकर

# अनुवादक के गुण

# अनुवादक के गुण

अनुवादक के लिए दोनों भाषाओं का अच्छा ज्ञान आवश्यक है। एक वह भाषा जिससे वह अनुवाद कर रहा है, और दूसरी वह जिसमें वह अनुवाद करता है।

अनुवादक बनना बहुत कठिन कार्य है। लेखक बनना जितना आसान है, अनुवादक बनना उतना ही कठिन है। यह कठिनाई इसलिए आती है क्योंकि अनुवादक का लक्ष्य मूल रचनाकार की भाव राशि को अन्य भाषा-शैली के परिधान में प्रस्तुत करके मूल कृति तथा कृतिकार को अन्य भाषा-भाषियों के हृदयासन पर प्रतिष्ठित करना होता है।

# अनुवादक के गुण

Q. सफल अनुवादक के गुणों की चर्चा कीजिए।

**अनुवादक के गुण**

वर्तमान समय में अनुवाद एक शक्तिशाली साधन है। अनुवादक में एक आलोचक, न्यायाधीश, विश्लेषक, दूरदर्शी, सर्वज्ञ आदि गुण होना चाहिए।

**1.मूल निष्ठा का निर्वाह**

अनुवादक को चाहिए कि अनुवाद सामग्री की मूल निष्ठा को बनाए रखें, अर्थ का अनर्थ न कर बैठे।

**2.स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा में निपुणता**

हिंदी से तेलुगु में अनुवाद करते समय हिंदी स्रोत भाषा और तेलुगु लक्ष्य भाषा होता है। अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का समान ज्ञान होना चाहिए।

# अनुवादक के गुण

**3.बोधगम्यता एवं संप्रेषणीयता**

अनूदित सामग्री को समझने का स्तर होना चाहिए। सरल व सुगम ढंग से आदान प्रदान करना है।

**4.विषय का विशिष्ट ज्ञान**

अलग-अलग विषयों के लिए भिन्न-भिन्न विशेषज्ञ अनुवादकों की जरुरत होती है।

**5.विभिन्न विषयों का ज्ञान**

अनुवादक को विभिन्न विषयों का सामान्य ज्ञान होना चाहिए।

**6.विषय के अनुरुप भाषा विधान**

अनुवादक को विषय और परिस्थिति के अनुकूल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

# अनुवादक के गुण

**7.अभिव्यक्ति पर पूर्ण नियंत्रण**

अनुवादक को अपनी विद्वता को अनुवाद के समय नहीं दिखाना चाहिए। अनुवाद की सीमा होती है, इच्छानुसार कुछ कहने की छूट नहीं होती, अपनी ओर से कुछ नहीं जोड़े।

**8.जीवन का व्यापक और गहरा अनुभव**

अनुवाद एक कला है यह जीवन भर के परिश्रम के बाद ही प्राप्त होता है।

**9.निष्ठा एवं अभ्यास की आवश्यकता**

अनुवादक बार-बार के अभ्यास से निष्ठा प्राप्त कर सकता है।

# अनुवादक के गुण

**10.शुद्ध तथा प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग**

शुद्ध एवं प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग अनुवादक को करना चाहिए। अनुवादक पर एक मार्गदर्शक की जिम्मेदारी होती है, उसे कई कसौटियों से गुजरना होता है।

*धन्यवाद*

# अनुवादक के गुण

## मूल कृति के प्रति आदर-भाव

सफल अनुवाद के लिए अनुवाद के ह्रदय में मूल रचना के प्रति सच्चे आदर की भावना होनी चाहिए। संभव है कि इस आदर भाव और आस्था के अभाव में अनुवाद तो हो जाए किंतु वह सफल नहीं कहा जाएगा। यह ठीक है कि मूल कृति के प्रति अनुवादक की प्रेम-भावना और आदर-भावना ही उसे सफलता नहीं दिला सकती, किन्तु यदि मूल के प्रति ऐसा दृष्टिकोण नहीं है तो वह आदर्श अनुवाद की श्रेणी में शायद ही रखा जा सके।

# अनुवादक के गुण

## मूल कृति के पुन:सृजन की प्रेरणा

सफल अनुवाद के सिद्धांत के अनुसार सफल अनुवाद उसे कहा जाता है जिसमें मूल की ध्वनि तथा आकार की ऐसी सफलता के साथ ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत किया जाए कि वह मूल का रूपान्तर मात्र न होकर उसकी आत्मा का प्रतिरूपण भी प्रतीत हो। यह तभी संभव होता है जब अनुवादक में किसी मूल रचना को अपनी भाषा में पुन:सृजित करने की प्रेरणा यदि ऐसी प्रेरणा है तो बाकी सब कुछ अनुवाक के कार्य की पद्धति, योग्यता तथा मूल की अभिव्यंजना शक्ति की तुलना में भाषा की (जिसमें की अनुवाद किया जा रहा है) क्षमता पर निर्भर करता है।

# अनुवादक के गुण

## अनुवादक की सृजनात्मक प्रतिभा

अनुवाद के सिद्धांत के अनुसार अनुवादक के लिए सृजनात्मक प्रतिभा का धनी होना आवश्यक है। पहले तो उसे मूल रचना का अच्छा ज्ञान और गहन भावबोध होना चाहिए। इसके लिए भाषा का अच्छा ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता। दूसरी उसे अनुवाद की भाषा पर भी अच्छी पकड़ होनी चाहिए। यह और भी अच्छा होगा यदि वह उस भाषा का अनुभवी और सृजनशील लेखक हो। जब तक अनुवादक मौलिक लेखक जैसी सृजनात्मक प्रतिभा वाला नहीं होगा, तब तक वह मूल रचना को अपनी भाषा में प्रस्तुत नहीं कर सकेगा, या फिर वह अधिक-से-अधिक उसका शाब्दिक अनुवाद ही कर पायेगा।

# अनुवादक के गुण

## अनुवादक का दोनों भाषाओं पर अधिकार

सफल अनुवाद के लिए अनुवादक को दोनों भाषाओं का अच्छा ज्ञान होना एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। अनुवाद में सफलता प्राप्त करने के लिए उसे अपनी मातृभाषा में अनुवाद करना चाहिए। हिंदी में अनुवाद उन अनुवादकों को करना चाहिए जिनकी मातृभाषा हिन्दी है और जिन्हें स्त्रोत भाषा का भी पर्याप्त ज्ञान है। ऐसा न करने पर अनुवाद तो हो जाएगा लेकिन वह सजीव एवं सरल नहीं होगा। यही बात अन्य भाषाओं पर भी लागू की जा सकती है। यही कारण है कि हिन्दी मातृभाषा वाले अनुवादकों द्वारा अंग्रेजी में किए गए अनुवादों को विदेशों में किसी व्यापारी प्रकाशक फर्म ने अब तक नहीं निकाला है, और निकाला भी है तो वे गिने-चुने ही होंगे। कुरान के सैकड़ों अनुवाद किए गए हैं, किन्तु अंग्रेजी मातृभाषा वाले अनुवादकों द्वारा किए गए अनुवाद ही अधिक सफल रहे।

# अनुवादक के गुण

## मूल कृति के विषय का ज्ञान

अनुवादक के लिए मूल कृति की विषय का पूर्ण ज्ञान होना भी अनुवाद के सिद्धांतों में से एक है। अनुवादक को तभी सफलता मिल सकती है जब वह पाठक को मूल रचना के यथासंभव निकटतम अर्थ तक पहुंचा दे और उसे मूल भावना में तल्लीन कर दे। अनुवादक की समस्या केवल भाषा के अच्छे ज्ञान होने तक सीमित नहीं है। सर्वप्रथम उसे अपने आपको उस विषय में गहरा उतारना चाहिए जिसका उसे अनुवाद करना है और उसकी क्षमताओं को हृदयंगम करना चाहिए। मूल विषय की पूरी जानकारी और प्रेरणात्मक उद्देश्य से तादात्म्य के बाद ही उसे अनुवाद में सफलता प्राप्त होगी।

# अनुवादक के गुण

## मूल कृति की संस्कृति का ज्ञान

अनुवादक को मूल रचना के सांस्कृतिक परिवेश का अच्छा ज्ञान होना भी सफल अनुवाद का एक आवश्यकता सिद्धांत है। इसके अभाव में दोनों भाषाओं का ज्ञान भी उसके किसी काम नहीं आएगा। जिन लोगों की भाषा में मूल कृति लिखी गई है, उनके रहन-सहन, रीति-रिवाजों, सामाजिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक मान्यताओं से परिचित होना अनुवादक के लिए आवश्यक होता है। ये सभी तत्व भाषा के ताने-बाने में गुथे रहते हैं और इनसे ही भाषा के मुख्य मुहावरे बनते हैं। इसलिए लक्ष्य भाषा में इन्हें अवतरित करना भी अनुवादक का दायित्व हो जाता है।

# अनुवादक के गुण

## जनसाधारण की भाषा का प्रयोग

सफल अनुवाद का यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि उसकी भाषा यथासंभव लोकभाषा के अधिकाधिक निकट हो। वह अपने समय की प्रचलित भाषा में हो। जहाँ तक हो सके वह किताबी, अस्वाभाविक और नीरस न हो। गढ़े-गढ़ाए शब्दों के प्रयोग से अनुवाद निर्जीव-सा हो जाता है। उपन्यास, कहानी और नाटकों के पात्र शुद्ध साहित्यिक भाषा बोलने की बजाय रोज़मर्रा की भाषा बोलते हैं और इसलिए अनुवाद में भी वैसी ही भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

# अनुवादक के गुण

## मूल लेखक की शैली

सफल अनुवाद के सिद्धांतों के संदर्भ में अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह सरल, सहज और स्पष्ट भाषा में अनुवाद करे। मूल लेखक की भाषा के संदर्भ में एक समस्या यह होती है कि अनुवादक मूल लेखक की शैली के प्रति कौन-सा दृष्टिकोण अपनाए। क्या मूल लेखक की शैली को अनुवाद में सुरक्षित रखा जा सकता है? यदि शैली से अभिप्राय: शब्दों का विशिष्ट चयन और विशिष्ट वाक्य-रचना है तो जाहिर है कि इसे सुरक्षित नहीं रखा जा सकता।

# अनुवादक के गुण

## हरिवंश राय बच्चन का मत है कि,

"सफल अनुवादक वही होता है जो अपनी दृष्टि भावों पर रखता है। शाब्दिक अनुवाद न शुद्ध होता है और न ही सुंदर। भाव जब एक भाषा-माध्यम को छोड़कर दूसरे भाषा-माध्यम से मुक्त होना चाहेगा तो उसे अपने अनुरूप उद्बोधक और अभिव्यंजक शब्द-राशि संजोने की स्वतंत्रता देनी होगी। यहीं पर अनुवाद मौलिक सृजन हो जाता है या मौलिक सृजन की कोटि में आ जाता है।"

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

# ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित ( कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड )

## प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर